

[A-34]

**SARDAR PATEL UNIVERSITY**  
**S.Y.B.A (EXTRANAL) EXAMINATION (Old course)**  
**FRIDAY, 16<sup>th</sup> July 2021 (Due to COVID-19 Crisis)**  
**10.00 A.M. TO 12.00 P.M.**  
**HINN200 HINDI COMPULSORY Non English Stream**

कुल गुण: ७०  
(१७)

प्र.१ किसी दो विषय पर सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

१. "मैया कबहिन बढैगी चौटी।

किली बार मोहि दूध पिवत भई अजहू है छोटी।।  
 तू जो कहति बल की बेनी ज्यों है है लॉबी मोटी।  
 काढत गुहत न्हावावत पोछत नागिन सी भुँइ लोटी।  
 काचौ दूध पिवावत पचि पचि देत न माखन रोटी।  
 'सूर' स्याम चिरजिवै दोऊ भैया हरि हलधर की जोटी।।"

२. "जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,  
 ढीले अपनी कोमल काया।  
 नील नयन से दुलकती हों,  
 ताराओं की पाँति घनी रे।"

३. "शालेय-शिक्षा अकेली ही मनुष्य का निर्माण नहीं करती। संस्कार और अध्यापन का बहुल सा क्षेत्र ऐसा है जो शालेय क्षेत्र के बाहर है।"

४. "इन्सान ने तकनीकी विकास में निःसंदेह नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, लेकिन प्राकृतिक प्रकोप के आगे किसी की कुछ नहीं चलती।"

प्र.२ 'संस्कृति का स्वरूप' निबंध की विशेषताएँ लिखिए।

(१८)

अथवा

प्र.२ 'महाजनी सभ्यता; निबंध की विशेषताएँ लिखिए।

प्र.३ 'ले चल मुझे भुलावा देकर' काव्य के आधार पर कवि के विचारों को व्यक्त कीजिए।

अथवा

(१८)

प्र.३ 'सरस्वती वंदना' काव्य का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

प्र.४(अ) निम्नलिखित परिच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

(१७)

नरेन्द्रनाथनी माताये तेमना आध्यात्मिक विकासमां भुज महेत्वनी भाग लज्यो हती. नरेन्द्र पोताना जवनना अंतिम वर्षो दरमियान पोतानी मातानुं अक वाक्य टांकता हता ते आ भुज हतुं, "तमारा समग्र जवनमां पवित्र रहे; तमारा आत्मसन्माननी रक्षा करो अने बीजाना आत्मसन्मान पर कही अतिकमल न करो. परम शांत बनो; परंतु जयां जरूर होय त्यां तमारा हैयाने कइए बनावी हो. जाएवा भजे छे तेम तेओ ध्यानमां पारंगत हता. कहेवाय छे के तेमने उँघमां अक दिव्य प्रकाश देजातो हतो अने तेमने ध्यानदरमियान बुझना दर्शन थता हतां.

नरेन्द्रनाथे सन 1880मां कलकता भाते प्रेसीडेंसी कोलेजमां प्रवेश लीघो हतो अने बीज वर्षे तेओअे कोलेज भदलीने कलकतामां स्कोटीश चर्च कोलेजमां ओडमिशन लीघु हतुं. ते दरमियान तेमणे पाश्चात्य तर्कशास्त्र, पाश्चात्य तत्वज्ञान अने युरोपना राष्ट्रोना इतिहासने अव्यास कर्यो हतो. सने 1८81मां तेमणे

ललित कलांनी परिक्षा पास करी हती अने सने 1884मां तमणे विनयन स्नातकनी परिक्षा पास करी हती.

बाणपक्षी ज तेओये आध्यात्मिकता, धंधरानुभुति अने सर्वोच्य आध्यात्मिक सत्यो जाणवामां रुचि दर्शावी हती. तेमणे पूर्व तथा पश्चिमनी धार्मिक तथा तत्वज्ञान संबंधी विविध पद्धतिओनी अव्यास कर्यो तथा तेओ जुदा जुदा धार्मिक अग्रणीओने मज्या. तेमना पर ते समयनी महत्वनी सामाजिक-धार्मिक संस्था ब्रह्मो समाजनी घणी असर पडी हती. तेमनी शर्यातनी मान्यताओनुं घडतर ब्रह्मो समाजे कर्युं. ब्रह्मो समाज निराकार भगवानमां मानतो, मूर्तिपुजाने नकारतो अने सामाजिक-आर्थिक सुधाराने समर्पित हतो. तेओ ब्रह्मोसमाजना देवेन्द्रनाथ टागोर अने केशवचंद्र सेनजेवा आगेवानोने मज्या तथा भगवानना अस्तित्व विषे तेमनी साथे प्रक्षोत्तरी करी, परंतु तेमने संतोषकारक जवाबो नहेता मज्या.

रामकृष्णनी साथे नवेम्बर 1881मां रामकृष्ण परंरंस साथेनी तेमनी मुलाकात तेमनी जिन्दगीनो संकान्तिकाण पुरवार थछ हती. नरेन्द्र रामकृष्ण अने तेमना विचाराने स्वीकारी शकता नहेता, तेम छतां तेओ तेमनी उपेक्षा पण करी शकता नहेता. रामकृष्णना मार्गदर्शन नीचेनी तालीमना पांच वर्ष दरमियान नरेन्द्रनुं अक भेयेन, मुंजयेला, अधीर युवानमांथी अक ओवा परिवर्तन युवानमां परीवर्तन थयुं, जे धंधरने पामवा माटे तमाम चीजे छोडी देवा तैयार हतो. आ समय दरमियान, नरेन्द्रये रामकृष्णने गुड तरीके स्वीकार्या. विवेकानंदने शीभवामां आव्युं हतुं के मानवजातनी सेवा धंधरनी सौथी असरकारक सेवा छे. स्वामी विवेकानंदना विचारानी अनेक विद्वानो अने प्रख्यात विचारकीये प्रशंसा करी हती तेमना प्रवासो, सणंग वक्तव्यो, अंगत यर्थाओ अने वातचीतोये स्वास्थ्यनो लोग लीधो. तेओ अस्थमा, डायबिटिस अने अन्य शारीरिक बिमारीओथी पिडाता हता जुलाई 4, 1902ना रोज ध्यानावस्थामां विवेकानंदनुं अवसान थयुं हतुं. तेमना अनुयायीओना मते आ महासमाधि हती.

अथवा

(अ) निम्नलिखित गद्यखंड का सार-संक्षेपण कीजिए।

ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्रों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गयी। कनेर, करवीर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिग्दगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही हैं। गेहूँ के सुनहले बालों से पवनस्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है। पत्तों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखायी पड़ती है। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमन्त्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। शीतकाल के ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ रही है। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार- सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असम्भव है, उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

\*\*\*\*\*